

श्रीः
श्रीमते रामानुजाय नमः
श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः
श्रीगुरुपरनपुराधीशाय श्रीकृष्णाय परब्रह्मणे नमः

श्री मेल्लत्तुर् नारायणभट्टतिरेः कृतिषु
॥ श्रीमन्नारायणीये सप्तमं दशकम् ॥

This document has been prepared by

Sunder Kidāmbi

with the blessings of

श्री रङ्गरामानुज महादेशिकन्

His Holiness śrīmad āṇḍavan śrīraṅgam

শ্রীঃ

শ্রীমতে রামানুজায় নমঃ

শ্রীমতে নিগমান্তমহাদেশিকায নমঃ

॥ শ্রীমন্নারাযণীযে সপ্তমং দশকম্ ॥

হিরণ্যগর্ভোৎপত্তিরর্ণনং, হিরণ্যগর্ভতপশ্চরণরর্ণনং,

রৈকুঠস্বরূপরর্ণনং, ভগরৎস্বরূপসাক্ষাৎকাররর্ণনং,

ভগরদনুগ্রহরর্ণনং চ

এরং দেৱ চতুর্দশাত্মকজগদ্রূপেণ জাতঃ পুন -

স্তস্যোর্ধ্বং খলু সত্যলোকনিলয়ে জাতোহসি ধাতা স্বয়ম্।

যং শংসন্তি হিরণ্যগর্ভমখিলত্রৈলোক্যজীৱাত্মকং

যোহভূৎ স্ফীতরজোরিকাররিকসন্নানাসিসৃক্ষারসঃ ॥ 7.1 ॥

সোহযং রিশ্বরিসর্গদত্ত হৃদযঃ সম্পশ্যমানস্বয়ং

বোধং খল্লনরাপ্য রিশ্বরিশ্বযং চিন্তাকুলস্তস্থিরান্।

তারত্বং জগতাম্পতে তপতপেতেয়ং হি রৈহাযসীং

রাণীমেনমশিশ্বরঃ শ্রুতিসুখাং কুর্ংস্তপঃপ্রেরণাম্ ॥ 7.2 ॥

কোহসৌ মামরদৎ পুমানিতি জলাপূর্ণে জগন্মণ্ডলে

দিক্ষুদ্বীক্ষ্য কিমপ্যনীক্ষিতরতা রাক্যার্থমুৎপশ্যতা।

দির্যং রর্ষসহস্রমাত্তপসা তেন ত্রমারাধিত -

স্তস্মৈ দর্শিতরানসি স্বনিলযং রৈকুঠমেকাদ্ভুতম্ ॥ 7.3 ॥

মাযা যত্র কদাপি নো রিকুরুতে ভাতে জগদ্ভ্যো বহিঃ

শোকক্রোধরিমোহসাধ্বরসমুখা ভারাস্ত দূরং গতাঃ।

সান্দ্রানন্দঝরী চ যত্র পরমজ্যোতিঃ প্রকাশাত্মকে

তত্তে ধাম রিভারিতং রিজযতে রৈকুঠরূপং রিভো ॥ 7.4 ॥

यस्मिन्नाम चतुर्भुजा हरिमणिश्यामारदातंरिषो
नानाभूषणरत्नदीपितदिशो राजद्विमानालयाः।
भक्तिप्राप्ततथारिधोन्नतपदा दीर्य्यन्ति दिर्या जना -
सुते धाम निरस्तसर्शमलं रैकुर्ठरूपं जयेत् ॥ 7.5 ॥

नानादिर्यरधुजनैरभिरुता रिदुल्लतातुल्यया
रिशेरान्मादनहृद्यगात्रलतया रिदोतिताशान्तरा।
रंरपादाम्बुजसौरभैककुतुकाल्लम्बीः स्वयं लम्ब्यते
यस्मिन् रिस्मयनीय दिर्य रिभरं तते पदं देहि मे ॥ 7.6 ॥

तत्रैरं प्रतिदर्शिते निजपदे रत्नासनाध्यासितं
भास्वरंकोटिलसंकिरीटकटक्याकल्लदीप्रकृति।
श्रीरंसान्कितमात्रकौस्तुभमणिच्छायारुणं कारणं
रिशेरषां तर रूपमैम्बत रिधिस्तुते रिभो भातु मे ॥ 7.7 ॥

कालाञ्छोदकलायकोमलरुचीचक्रेण चक्रं दिशा -
मारुणानमुदारमन्दहसितस्यन्दप्रसन्नाननम्।
राजकम्बुगदारिपङ्कजधरश्रीमद्भुजामण्डलं
अष्टुष्टिकरं रपुस्तर रिभो मद्रोगमुद्रासयेत् ॥ 7.8 ॥

दृष्टरा सम्भृतसम्भ्रमः कमलधु -
स्त्रं पादपाथोरुहे
हर्षारेशरशंरदो निपतितः
प्रीत्या कृतार्थाभरन्।
जानास्येर मनीषितं मम रिभो
ञ्जानं तदापादय
द्वैताद्वैतभरंस्वरूपपरमि -
त्याचष्ट तं रंरां भजे ॥ 7.9 ॥

आताम्रे चरणे रिनम्रमथ तं हस्तं हस्ते स्पर्शन्
बोधस्ते भरिता न सर्गविधिभिर्वक्त्रोऽपि सञ्जायते।
इत्याभाष्य गिरं प्रतोष्य नितरां तच्छित्तगूढः स्वयं
सृष्टौ तं समुदैरयः स भगवन्नूल्लासयोल्लाघताम् ॥ 7.10 ॥

॥ इति श्रीमन्नारायणीये सप्तमं दशकं समाप्तम् ॥